मानसरोदक-खंड / पद्य सं. 8

कहा मानसर चाह सो पाई । पारस-रूप इहाँ लगि आई ॥

भा निरमल तिन्ह पायँन्ह परसे । पावा रूप रूप के दरसे ॥

मलय-समीर बास तन आई । भा सीतल, गै तपनि बुझाई ॥

न जनौं कौन पौन लेइ आवा । पुन्य-दसा भै पाप गँवावा ॥

ततखन हार बेगि उतिराना । पावा सखिन्ह चंद बिहँसाना ॥

बिगसा कुमुद देखि ससि-रेखा । भै तहँ रूप जहाँ जोइ देखा ॥

पावा रूप रूप जस चहा । ससि-मुख जनु दरपन होइ रहा ॥

नयन जो देखा कवँल भा, निरमल नीर सरीर ।

हँसत जो देखा हंस भा, दसन-जोति नग हीर ॥8॥

.

अर्थ :

मानसरोवर ने सोचा कि जो उसने चाहा था, वो मिल गया. पारस रुपी पद्मावती स्वयं यहाँ तक आ गयी. उसके पाँवों का स्पर्श करके मैं निर्मल हो गया हूँ. उसके रूप का दर्शन कर मुझे भी रूप की प्राप्ति हो गयी है, अर्थात् पद्मावती के सौन्दर्य ने मानसरोवर को भी सुंदरता प्रदान कर दी है. उसके तन से मलयगिरि से चलने वाली हवा जैसी चंदन की सुगंध आ रही है. उसकी शीतलता ने शरीर की तपन बुझा दी है, अर्थात् पद्मावती के स्पर्श से मानसरोवर शीतल हो गया. न जाने कौन सी हवा चली जो पद्मावती को यहाँ ले आई. निश्चय ही, यह मेरे पुण्यों का फल है. यह सोचकर मानसरोवर ने खोए हुए हार को उसी क्षण सतह पर तैरा दिया, जिसे पाकर सखियाँ प्रसन्न हो उठीं और पद्मावती रुपी चंद्र मुस्करा उठा. चन्द्रमा अर्थात् पद्मावती की मुस्कान देखकर कुमुदिनियाँ अर्थात् सखियाँ भी मुस्कुराने लगीं. पद्मावती ने जिस किसी की

ओर भी नज़र दौड़ाई वह पद्मावती जैसा ही हो गया. जो जैसा रूप चाहते थे वैसा ही रूप उन्होंने पाया. मानो चंद्रमा का मुख यानि पद्मावती का मुख दर्पण हो गया हो.

मानसरोवर के जल में खिले कमल पद्मावती के नैनों के प्रतिबिंब हैं. सरोवर का स्वच्छ जल पद्मावती की निर्मल काया का प्रतिबिंब है, उसकी हँसी ही सरोवर में हंसों के रूप में दिख रही थी और उसकी दंत पंक्तियाँ सरोवर में हीरे-मोती के रूप में जगमगा रही थीं.

शब्दार्थ :

पारस = पारस पत्थर, परसे = स्पर्श से, ततखन = तत्क्षण (उसी पल), बिगसा = मुकुराया, दसन = दांत

********** मानसरोदक खंड समाप्त **********